विश्वविद्यालय कुलगीत

बाबासाहब का विचार–दर्शन, करता है आह्वान
समतामूलक समाज का, करना है निर्माण !

समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता, प्रजातंत्र वैधानिक प्रतिमान,
विचार, विश्वास, धर्म, अभिव्यक्ति, उपासना संवैधानिक प्रावधान।
शिक्षा, उद्यमिता, विकास, कौशल, प्रसार, प्रशिक्षण हैं आधार,
राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सशक्ति से होंगे भागीदार।

इसीलिये तो बना देश का पहला विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान ॥ 1॥

बाबासाहब का विचार–दर्शन, करता है आह्वान
समतामूलक समाज का, करना है निर्माण !

रविदास, मान्यवर बाबूजी, बुद्ध, कबीर, फूले की विचारधारा,
अमर रहे बिरसा, भीमा, टान्ट्या, जैसे नदी नर्मदा की धारा।
विधि–न्याय, ग्रामीण, शिक्षा, कृषि, प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान,
जाति, भेद, शोषण, उत्पीड़न, अंधश्रद्धा पर करें अनुसंधान।

प्रौद्योगिकी, नीति, विकास, योजना, सहभागिता से करे राष्ट्र का निर्माण ॥2॥

बाबासाहब का विचार–दर्शन, करता है आह्वान
समतामूलक समाज का, करना है निर्माण !

सत्य, अहिंसा, सदाचार, करूणा, मैत्री, पंचशील अनुशासन,
गरिमा, धर्म, विकास, संपदा, उत्पीड़न सामाजिक चिंतन।
संविधान, नीति, न्याय, प्रजातंत्र से हो सामाजिक परिवर्तन,
शोध, प्रशिक्षण, प्रसार, शिक्षा के सामाजिक केन्द्र महान।

शोषित, वंचित, पीड़ित, संवेदीप्रज्ञा से होगा सामाजिक उत्थान ॥ 3 ॥

बाबासाहब का विचार–दर्शन, करता है आह्वान
समतामूलक समाज का, करना है निर्माण !

अत्त दीपो भव अत्त दीपो भव अत्त दीपो भव

– रचयिता : डॉ. आर.एस.कुरील
संस्थापक कुलपति